E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(1): 113-119
Received: 14-11-2020
Accepted: 17-12-2020

चन्द्रकली पटेल
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

डॉ. गायत्री मिश्रा
प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
चन्द्रकली पटेल
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

श्री नरेन्द्र मोदी जी का राजनैतिक योगदान व प्रभाव का अध्ययन

चन्द्रकली पटेल एवं डॉ. गायत्री मिश्रा

सारांश
वर्तमान भारत के लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था अन्तर्गत राजनीति के शिखर पर विराजमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द मोदी जी की राजनैतिक भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, विगत एक दशक से भारत की राजनीति में मोदी जी का बहुत बड़ा योगदान है, देश में इनकी महत्वपूर्ण राजनैतिक भूमिका गुजरात प्रांत के मुख्यमंत्री वर्ष 2001 से 25 मई 2014 के कार्यकाल से ही रही है, गुजरात के विकास से सम्पूर्ण देश में राजनैतिक छवि बढ़ी है, अपने मुख्यमंत्रित्व काल में गुजरात राज्य का समग्र विकास करते हुए एक उदाहरण प्रस्तुत किए है। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के प्रचण्ड बहुमत हासिल हुई, सम्पूर्ण देश में मोदी जी की लहर थी चुनाव में भारी जीत दर्ज करने के बाद 20 मई 2014 को भारतीय जनता पार्टी के नव निर्वाचित लोकसभा सदस्यों की बैठक (संसदीय दल की बैठक) संसद के केन्द्रीय कक्ष में सम्पन्न हुई, इस बैठक में आने से ठीक पहले जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संसद की सीढ़ियों पर पहुंचे तो उन्होंने शीश झुकाकर लोकतंत्र के इस मन्दिर को प्रणाम किया। संसद को लोकतंत्र का मन्दिर कहते तो सभी राजनेता रहे हैं किंतु इसे व्यवहार में सम्मान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने ही दिया। ऐसा आजादी के बाद पहली बार हुआ था।

मुख्यशब्दः श्री नरेन्द्र मोदी जी, राजनैतिक योगदान, प्रभाव

प्रस्तावना
श्री नरेन्द्र मोदी जी को 13 सितम्बर 2013 को संसदीय बोर्ड की बैठक में आगामी लोकसभा चुनाव 2014 के लिए प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया गया था। गोवा में भारतीय जनता पार्टी के कार्यसमिति द्वारा वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को 2014 के लोकसभा आम चुनाव अभियान की कमान भी सौंपी गई थी। संसदीय बोर्ड की बैठक 13 सितम्बर 2013 को सम्पन्न हुई इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के शीर्षस्थ व वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी जी मौजूद नहीं रहे और भारतीय जनता पार्टी के उस समय के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने इसकी घोषणा की थी। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित होने के बाद चुनाव अभियान की कमान पार्टी अध्यक्ष राजनाथ सिंह को सौंप दी। प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित होने के बाद मोदी जी लोकसभा चुनाव 2014 की पहली चुनाव विगुल अथवा रैली की शुरूआत हरियाणा प्रांत के रिवाड़ी शहर से आरम्भ हुई। [1]
न्यूज एजेन्सीज व पत्रिकाओं द्वारा किये गये तीन प्रमुख सर्वेक्षणों ने नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद के लिए जनता की पहली पसन्द बताया था। ए सी वोटर पोल सर्वेक्षण के अनुसार नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार/प्रत्याशी घोषित करने से एन.डी.ए. के वोट प्रतिशत में पांच प्रतिशत के इजाफे के साथ 171 से 220 सीटें मिलने की संभावना व्यक्त की गई। सितम्बर 2013 में नीलसन होल्डिंग और इकोनामिक टाइम्स ने जो परिणाम प्रकाशित किए थे उनमें शामिल शीर्षस्थ 100 भारतीय कार्पोरेट में से 74 कार्पोरेट ने नरेन्द्र मोदी तथ 7 ने राहुल गांधी को बेहतर प्रधानमंत्री बतलाया था।
नोबल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री अमर्त्यसेन मोदी को बेहतर प्रधानमंत्री नहीं मानते ऐसा उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा था, उनके विचार से मुस्लिमों में उनकी स्वीकारता संदिग्ध हो सकती है, जबकि जगदीश भगवाती और अरविन्द पान गढ़िया को मोदी का अर्थशास्त्र अधिक बेहतर लगता है, योग गुरू स्वामी रामदेव व मुरारी बाबू जैसे कथावाचक ने नरेन्द्र मोदी जी का समर्थन किया।

शोध विधि
शोधकार्य में विषयवस्तु से सम्बन्धित वास्तविक एवं विश्वसनीय सूचनाओं की प्राप्ति के लिए केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं स्थानीय स्तर पर स्थापित कार्यालयों, स्वयंभूसेवी संगठनों, जनप्रतिनिधियों से आवश्यक सूचनाएँ, अभिलेख, दस्तावेज, पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, शोध पत्रों का गहन अध्ययन कर उक्त कार्य को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

2014 का लोकसभा चुनाव

सन् 2014 में सम्पन्न लोकसभा चुनाव कई मायनों में अलग रहे हैं, आजादी के बाद से यह पहला ऐसा आम चुनाव था, जिसमें मतदान सर्वाधिक चरणों में सम्पन्न हुआ। इस आम चुनाव में सर्वाधिक खासियत यह रही यह लोकसभा का चुनाव श्री नरेन्द्र मोदी बनाम अन्य के आधार पर लड़े गये। एक ओर नरेन्द्र मोदी जहां सुशासन की ओर भ्रष्टाचार–विरोध की बातें कर रहे थे वहीं सभी विरोध दल सिर्फ मोदी विरोध की बातें करते रहे। इन चुनावों के आगाज में तुरंत पहले ही भारतीय जनता पार्टी ने नरेन्द्र मोदी को चुनाव अभियान समिति का प्रमुख नियुक्त किया था। इसके कुछ समय बाद नरेन्द्र मोदी को भारतीय जनता पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया गया और इसी के साथ सारा चुनाव अभियान नरेन्द्र मोदी के इर्द–गिर्द ही सिमट कर रह गया। [2]

सन 2014 के लोकसभा चुनाव के समय में लगभग महीने भर चली चुनावी सभायें, रैलियों, रोड शो, और नुक्कड़ चुनावी सभाओं के दौर में लगभग सभी की जुवान पर बस एक ही सवाल था कि इस लोकसभा चुनाव अभियान का भारतीय जनता पार्टी की तरफ से पार्टी का प्रमुख नायक कौन है, और इसका जबाब भी सभी ओर से एक ही मिलता था कि नरेन्द्र मोदी, नरेन्द्र मोदी, नरेन्द्र मोदी। समूचे चुनाव प्रचार–प्रसार के दौरान आम जनमानस मतदाताओं, कार्यकर्ताओं में चर्चा का केन्द्र बिन्दु एवं प्रमुख मुद्दा था– नरेन्द्र मोदी।

वस्तुतः भारतीय जनता पार्टी के सम्पूर्ण लोकसभा आमचुनाव का बोझ पार्टी के तरफ से नरेन्द्र मोदी के कंधो पर ही रख दिया गया था। यह एक सच्चाई है कि भारत वर्ष के नक्शे में उत्तर में जम्मू कश्मीर से दक्षिण में कन्या कुमारी तक तथा पश्चिमी छोर में कच्छ (गुजरात) से लेकर पूर्वी छोर में इम्फाल तक चुनाव की धुरी नरेन्द्र मोदी ही रहे। वस्तुतः यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण चुनाव की धुरी भारतीय जनता पार्टी के नायक सिर्फ और सिर्फ नरेन्द्र मोदी ही रहे।

कुछ विरोधियों द्वारा चुनाव अभियान के दौरान नरेन्द्र मोदी के दो लोकसभा क्षेत्रों (वाराणसी और बड़ोदरा) से लड़ने पर भी सवाल उठाये गये थे, किंतु वास्तविकता तो यह है कि नरेन्द्र मोदी देश भर में लगभग 400 सीटों पर लड़े। समूचे देश भर में 400 लोकसभा क्षेत्रों में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर नरेन्द्र मोदी ही तो चुनाव लड़े थे। भारतीय लोकतंत्र का यह पहला ही चुनाव था, जिसमें राजनीतिक दल गौण ले गये थे और नरेन्द्र मोदी मुखर रहे, नरेन्द्र मोदी केवल भारतीय जनता पार्टी के ही स्टार प्रचारक नहीं थे अपितु वे सहयोगी दलों के लिए भी वे स्टार प्रचारक थे, चुनाव के दौरान भारतीय जनता पार्टी के साथ–साथ उसके सहयोगी दलों के लोकसभा प्रत्याशी भी चाहते थे कि किसी भी तरह उनके क्षेत्र में नरेन्द्र मोदी की कम से कम एक चुनावी जनसभा जरूर हो जाये जिससे हमारे क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी की विजय की गारण्टी पूर्व रूपेण से सुनिश्चित हो जाये।

विरोधी दलों और उसके जनप्रतिनिधियों, विपक्ष के कार्यकर्ताओं, चुनाव मैदान में उतरे हुए प्रत्याशियों ने भी नरेन्द्र मोदी का प्रचार (नकारात्मक) करने में कोई कसर और कमी नहीं की। जिस प्रकार हर लोकसभा क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर नरेन्द्र मोदी चुनाव लड़ रहे थे ठीक उसी प्रकार प्रत्येक राजनैतिक दल नरेन्द मोदी से लड़ रहा था। प्रत्येक राजनेता मोदी पर निशाना साध रहा था कितने आश्चर्य की बात है कि पश्चिम बंगाल जैसे राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी सिर्फ और सिर्फ नरेन्द्र मोदी पर ही हर सभा में अपना निशाना साधती नजर आयी। पारंपरिक रूप से पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी का कोई प्रभाव नहीं है। पहले वहां वाम दलों का परचम लहराता था तो आज वहां की राजनीति पर तृणमूल कांग्रेस (ममता बनर्जी) का दबदबा है। कांग्रेस वहां सदैव से ही दूसरे–तीसरे स्थान पर रही है। ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल की सत्ता वामदलों की बेदखल करके प्राप्त की थी। आज भी बंगाल की गली, मुहल्लों तक में तृणमूल कांग्रेस की लड़ाई वामदलों से है। इसी लिहाज से ममता बनर्जी को वामदलों और कांग्रेस पार्टी पर हमला बोलना चाहिए था लेकिन ममता बनर्जी हमेशा नरेन्द्र मोदी पर ही हमला बोलती नजर आई। यहां ममता बनर्जी वामदलों और कांग्रेस पार्टी को बख्श कर तीखा हमला नरेन्द्र मोदी पर बोलती नजर आई तो इसके निहतार्थ आसानी से समझे जा सकते थे। [3]

लगभग दो माह चले औपचारिक चुनाव प्रचार के दौरान नरेन्द्र मोदी ने लगभग 437 रैलियां की और 5800 से ज्यादा कार्यक्रम, होलोग्राम उड़ी सिस्टम के जरिये सम्बोधित किये। चाय पर चर्चा के संवाद में भी नरेन्द्र मोदी ने 2 करोड़ से अधिक लोगों से सीधा संवाद स्थापित किया। प्रचार के दौरान नरेन्द्र मोदी ने देश के 25 राज्यों में 3 लाख किलोमीटर से भी अधिक की यात्रा की। समूचे लोकसभा चुनाव के दौरान शायद ही उनका कोई दिन पूरा गुजरात में गुजरा है। मजे कि बात तो यह है कि इस दौरान शायद ही कोई ऐसी रात रही हो जो उनको गांधीनगर से बाहर गुजरी हो। देश भर घूम–घूम कर प्रचार कर रहे थे लेकिन इस दौरान भी उन्होंने गुजरात राज्य के प्रशासन को नजर अंदाज नहीं किया। लोकसभा चुनाव के दौरान स्पष्ट रूप से दिखा कि श्री नरेन्द्र मोदी ने सभी सीमाएँ तोड़ दी। चाहे वह क्षेत्रीय मुद्दे की राजनीति हो अथवा जातिवादी राजनीति की सीमा। चुनाव या तो मोदी के दम पर लड़ा गया अथवा मोदी जी के विरोध के नाम पर।

चुनावी शोरगुल थमने के साथ ही 16वीं लोकसभा का यह सियासी महासंग्राम रैलियों के मामले में कीर्तिमान बन गया। भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी ने अकेले ही रिकार्ड 200 से अधिक रैलियाँ समेत कुल 2827 कार्यक्रम किए। सोसल मीडिया के अतिरिक्त 3 डी होलोग्राम रैलियों के जरिये इस बार के चुनाव प्रचार अभियान में अत्याधुनिक तकनीक का भी प्रयोग किया गया था। पिछले आठ महीनों में मोदी ने तीन लाख किलोमीटर से भी अधिक चुनावी यात्रा करने में अपना भरपूर समय और श्रम लगाये हैं।

लोकसभा चुनाव 2014 में मोदी जी के चुनावी शोर में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आड़वानी, सुषमा स्वराज, मुरली मनोहर जोशी से लेकर भाजपा शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों की आवाजें भी दब गई, जबकि ये नेता भी चुनाव प्रचार में लगे थे, कुछ हद तक पार्टी अध्यक्ष राजनाथ सिंह और अरूण जेटली ही पार्टी के प्रचार तंत्र में दिखते रहे, बहरहाल चुनाव कार्यक्रम घोषित हो जाने के बाद जम्मू कश्मीर के उधमपुर क्षेत्र से मोदी की भारत विजय रैलियों का सिलसिला शनिवार को उ.प्र. के बलिया में समाप्त हो गया, खास बात यह है कि भाजपा के मिशन दो सौ बहत्तर + को मोदी ने रैलियों के माध्यम से तो पूर्ण कर ही दिया है। चुनाव को लेकर मोदी इससे ज्यादा रैलियां आरंभ कर दी थी, तब पहली रैली 15 सितम्बर हरियाणा के खोडी मे हुई थी, चुनाव कार्यक्रम घोषित होने से पहले तक वे हुंकार, ललकार व शंखनाद जैसे नामों वाली लगभग 75 रैलियां कर चुके थे। बाद में चुनावी कार्यक्रम घोषित होने के बाद उन्होंने बीते 26 मार्च से 25 राज्यों में लगभग डेढ़ माह तक बिना रूके 210 रैलियां की, इस तरह मोदी की लोकसभा चुनाव 2014 में रैलियों का आंकड़ा भाजपा के मिशन 272 से अधिक हो गया। हालांकि चुनावी रैलियों का रिकार्ड बनाने वाले मोदी ने विधिवत प्रेश कांफ्रेंश आयोजित नहीं की।

सन् 2014 के लोक सभा चुनावों के लगभग सन् 2014 के चुनावों के अंतिम चरण का मतदान 12 मई को होना था और 10 मई को सम्बन्धित चुनाव क्षेत्रों में चुनाव प्रचार समाप्त हो गया। नरेन्द्र

मोदी जी ने अपनी अन्तिम चुनावी रैली उत्तरप्रदेश के बलिया में की। चुनाव प्रचार समाप्त होते ही नरेन्द्र मोदी ने अपने ब्लाग पर लिखा कि – 2014 के लोकसभा चुनाव प्रचार का आज अन्तिम दिन था। मैने अपनी आखिरी रैली पूर्वी उत्तरप्रदेश के बलिया में की जो सन् 1857 की क्रांति के नायक मंगल पांडेय की भूमि है। 3 सितम्बर सन् 2013 को भाजपा के पी.एम. पद के उम्मीदवार का दायित्व मिलने के बाद मैने पूरे देश का दौरा किया। मेरी पार्टी के मित्रों ने बताया कि इस दौरान रैलिया 3 डी सभायें, चाय पर चर्चा आदि को मिलाकर मैने लगभग 5800 कार्यक्रम किए, 3 लाख किलोमीटर की यात्रा कर पूरे देश में 440 कार्यक्रम और रैलियों के माध्यम सभा को सम्बोधित की। इनमें भारत विजय रैलियां भी शामिल हैं। जिनकी शुरूआत मैने 26 मार्च 2014 को माँ वैष्णवी के आशीर्वाद से की थी। एक बार फिर भारत की विधाता लोगों का उत्साह हमारी संस्कृति की भव्यता को देखने का सुखद अवसर मिला। संगठन के लिए काम करते हुए मैने पहले भी पूरे भारत वर्ष की यात्रा की है लेकिन इस बार का अनुभव एकदम अलग अद्भुत था। मुझे लोगों के अभूतपूर्व आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आमतौर पर इतने दिनों तक चलने वाले प्रचार को थकावट भरा माना जाता है। लेकिन मुझे गहरे अनुभव और संतोष का आनंद हो रहा है, एक ऐसा अनुभव जो कि साधक लम्बी साधना के बाद प्राप्त होती है। मै जब पूरे प्रचार अभियान पर नजर डालता हूं तो मेरे मत में तीन शब्द आते हैं, व्यापक, अभूतपूर्व और संतोषजनक। हमने प्रचार अभियान के दौरान स्वशासन और विकास के एजेण्डे को भारत के हर कोने तक पहुंचाने का प्रयास किया, लोगों झूठे वायदे और अपनी नाकामियों को छुपाने के लिए वंशवाद आधारित घिसे–पिटे बयानो को सुन सुनाकर थक चुके हैं। वे एक बेहतर भविष्य चाहते हैं और सिर्फ एन.डी.ए. की ही एक ऐसा गठबंधन है जो यह परिवर्तन दे सकता है। सबसे ज्यादा प्रसन्नता कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम को देखकर हुई। यह प्रचार अभियान प्रयोग के लिए भी याद रखा जायेगा। राजनीति में सामान्यतः प्रचार सिर्फ एक तरफा संदेश होते थे लेकिन हमारी चाय पर चर्चा इस मामले में लीक से हटकर थी। 3 डी रैलियों के प्रति लोगों का उत्साह गजब का था। भारत के चुनावी इतिहास में पहली बार एक विशेष वालेन्टियर स्थापित किया गया। प्रचार के दौरान अद्भुत तरीके से सोसल मीडिया का इस्तेमाल किया गया। मुझे बीत आठ महीनों में जो स्नेह मिला उसे मैं नहीं भूल सकता। मुझे पटना की घटना हमेशा याद रहेगी वहां बम बिस्फोट हुए लेकिन लोगों का संकल्प उन पर भारी पड़ा। किसी ने रैली स्थल नहीं छोड़ा, मैने उस दिन स्पष्ट संदेश दिया कि मैं प्रचार अभियान के दौरान भी दोहराता रहा कि हम फैसला कर सकते हैं कि क्या हम एक दूसरे से लड़ना चाहते हैं या फिर हम एक साथ मिलकर गरीबी से लड़ना चाहते हैं? पहला काम हमें कहीं नहीं ले जायेगा जबकि दूसरा हमारे देश की नई ऊँचाइयों तक ले जायेगा। मैने अक्सर कहा कि नरेन्द्र मोदी या कोई एक व्यक्ति यह चुनाव नहीं लड़ रहा है भारत की जनता ने इस राज्यो के चुनाव को अपने कंधे पर उठा लिया है भारत का प्रत्येक नागरिक बदलाव का वाहक बन गया है। मैने कई स्थलों पर रैलियाँ की। जहाँ मौसम बेहद गर्म था फिर भी बड़ी संख्या में लोग उपस्थित हुए। उनका आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है मै भारत की जनता को आश्वस्त करना चाहता हूं कि मै इस अपार प्रेम के कर्ज को अभूतपूर्व विकास के रूप में चुका जाऊंगा, जो मजबूत भारत की बुनियाद बनेगा।

प्रचार आज खत्म हो गया लेकन एक चरण का चुनाव अभी बाकी है, मैं उन लोगों खासकर युवाओं के रिकार्ड संख्या में मतदान करने की अपील करता हूं जो अन्तिम चरण में मतदान करने वाले हैं। हर वोट देश के लिए कीमती है, इस भारत भ्रमण के दौरान मैने साक्षात् अनुभव किया है कि हमारा देश विशेष है, इसका एक विशेष दायित्व है, इतिहास में अनेक उदाहरण भरे हुए हैं कि किस तरह हमारे देश में समय–समय पर दुनिया को रास्ता दिखाया है और आज एक बार फिर आवश्यकता है कि भारती अपनी जगत गुरू की भूमिका निभाए।

प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार

प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार भारतीय जनता पार्टी द्वारा नरेन्द्र मोदी को घोषित कर देने के बाद वे सम्पूर्ण भारत में चुनावी रेली, रोड शो के साथ भ्रमण किए। इस दौरान तीन लाख किलोमीटर की यात्रा करते हुए सम्पूर्ण भारत वर्ष में कुल 437 बड़ी चुनावी रैलियाँ, डन्डी सभायें व चाय पर चर्चा आदि को कुल मिलाकर 5827 कार्यक्रम किये। चुनाव अभियान की शुरूआत उन्होंने 26 मार्च 2014 को माँ वैष्णव देवी के आशीर्वाद के साथ जम्मू कश्मीर से की और समापन मंगल पाण्डेय (अमर शहीद) की धरती व जन्मभूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जिले में किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की जनता ने एक अभूतपूर्ण/अद्भुत चुनाव प्रचार लोकसभा चुनाव 2014 का देखा था। यही नहीं नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व मे भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा चुनाव 2014 के चुनाव परिणाम में अभूतपूर्व सफलता हासिल की थी।

20 मई 2014 को संसद भवन में भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित भाजपा संसदीय दल एवं सहयोगी दलों की एक संयुक्त बैठक में जब लोग प्रवेश कर रहे थे तो श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रवेश करने के पूर्व संसद भवन के ठीक वैसे ही झुककर जमीन के तरफ ऐसे प्रणाम किया जैसे किसी पवित्र मन्दिर में श्रृद्धालु अपने ईष्ट देवता की मूर्ति को नमन करते हैं। संसद भवन के इतिहास में मोदी जी ने ऐसा करके सम्पूर्ण देश के संसदों के लिए, एक बहुत ही आदर्श उदाहरण पेश किये। संसदीय दल की बैठक में मोदी जी को सर्व सम्मति से न केवल भारतीय जनता पार्टी संसदीय दल अपितु एन.डी.ए. का भी नेता चुना गया राष्ट्रपति ने नरेन्द्र मोदी जी को भारत का 15वां प्रधानमंत्री की नियुक्ति करते हुए इस आशय का विधिवत पत्र सौंपा। नरेन्द्र मोदी ने दिन सोमवार दिनांक 26 मई 2014 को प्रधानमंत्री पद एवं गोपनीयता की शपथ ली।[4]

लोकसभा चुनाव 2014 में प्रधानमंत्री पद के लिए श्री मोदी जी को उम्मीदवार के रूप मे घोषित हो जाने के बाद देश में मोदी लहर को माहौल हो गया था। लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत के बाद जहां एक ओर अशोक रोड स्थित भाजपा मुख्यालय पटाखों की आवास से गूंजता रहा, वहीं अकबर रोड स्थान कांग्रेस मुख्यालय में मातमी सन्नाटा पसरा रहा। मतगणना के दौरान जैसे–जैसे भाजपा का ग्राफ बढ़ता रहा, वैसे–वैसे कार्यकर्ताओं का हुजूम भी मिठाई खिलाकर एक दूसरे को जीत बधाई देते रहे। वहीं पिछले दो आम चुनावों के बाद ढ़ोल–नगाड़ों से गूंजने वाले कांग्रेस मुख्यालय से कार्यकर्ता तो दूभर उसके नेताओं ने भी दूरी बनाए रखी।

भाजपा मुख्यालय से जीत की खुशबू तो एक दिन पहले से तभी आने लगी थी, जब लड्डू बनने शुरू हो गए थे। शुक्रवार को शुरूआती रूझानों से जीत का अंदाजा लगा चुके दिल्ली व एनसीआर के भाजपा कार्यकर्ताओं ने भाजपा का मुख्यालय का रूख कर लिया। दोपहर आते–आते जीत सुनिश्चित देखा वरिष्ठ नेता भी पार्टी मुख्यालय पहुंचने लगे, बधाई देने और मिठाई बांटने का दौर दिन भर चलता रहा। जीत का यह जश्न मुख्यालय की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहा। बाहर सड़क पर भी आतिशबाजी खूब हुई। बैंड बाजे के साथ आए, तो कुछ ऐसे हाथी लेकर आए जिन पर कमल का निशान बना था। जीत के जश्न में डूबे कार्यकर्ताओं की जुबान पर सिर्फ मोदी का नाम था। सिर पर भगवा रंग की टोपी और मोदी की तस्वीर बनी सफेद टीशर्ट पहने ये कार्यकर्ता मोदी–मोदी और आ गई मोदी सरकार के नारे लगा रहे थे। कुछ की टीशर्ट पर मोडीफाइड इंडिया भी

लिखा था तो कोई अपने हाथ में मोदी की फोटो वाली तख्तियां लिए थे। कुछ कार्यकर्ताओं भाजपा के वरिष्ठ नेता वेंकैया नायडू, रविशंकर प्रसाद, रामलाल, मुख्तार, अब्बास नकवी, प्रकाश जावड़ेकर भी एक दूसरे की मिठाई खिलाकर बधाई दे रहे थे।
2014 के लोकसभा के आमचुनाव का भाजपा का नारा सरकार ही नहीं, संगठन के भी सुप्रीमों होंगे। मोदी 2014 के चुनाव में नरेन्द्र मोदी के नाम पर दर्ज हुई, ऐतिहासिक जीत के बाद यह तय हो गया है कि सरकार ही नहीं संगठन भी उनकी ही राह पर चलेगा। एक तरह से वह संगठन के भी सुप्रीमों होंगे और भाजपा महासचिव अमित शाह उनके सिपहसलार। अकेले दम बहुमत के पार पहुंची भाजपा सरकार में सहयोगी दल भी उचित स्थान पाएंगे।
भाजपा के लिए सबसे बड़ी समस्या अंदरूनी खींचतान और कलह रही है। बात नेतृत्व की रही हो या रणनीति की विवाद हमेशा से पार्टी को झुलसाता रहा है। मोदी की जीत के बाद यह लगभग तय हो गया है कि अगले कुछ वर्षों तक पार्टी और सरकार एक ही राह पर चलेगी। नेतृत्व की समस्या फिलहाल खत्म हो गई है। जाहिर है कि ऐसी स्थिति में लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी समेत कई अन्य क्षुब्ध व नाराज नेताओं को भी चाहे–अनचाहे पार्टी लाइन पर ही चलने को मजबूर होना पड़ेगा। दरअसल अभूतपूर्व जीत के साथ ही मोदी ने यह साबित कर दिया है कि वह जनता के ही नहीं कार्यकर्ताओं के भी नायक है। लिहाजा संगठन भी उनके दिशा–निर्देश मे ही चलेगा। मनमोहन सिंह को कमजोर ठहराने वाली भाजपा का शीर्ष नेतृत्व यह बताता रहा है कि प्रधानमंत्री की पकड़ सरकार पर ही नहीं अपने संगठन पर भी होना चाहिए। मोदी उसी रूप में दिखेंगे। यह तय माना जा रहा है कि पार्टी का अध्यक्ष कोई भी हो एजेन्डा मोदी जी का चलेगा। दरअसल, लोकसभा की जीत के बाद कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी मोदी के विश्वस्त अमित शाह ही कमान संभाल सकते हैं। सरकार का स्वरूप लगभग तय हो गया है कि अगले कुछ वर्षों तक पार्टी और सरकार एक ही राह पर चलेगी। नेतृत्व की समस्या फिलहाल खत्म हो गई है। जाहिर है कि ऐसी स्थिति में लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी समेत कई अन्य क्षुब्ध व नाराज नेताओं को भी चाहे–अनचाहे पार्टी लाइन पर ही चलने का मजबूर होना पड़ेगा। दरअसल अभूतपूर्व जीत के साथ ही मोदी ने यह साबित कर दिया है कि वह जनता के ही नहीं कार्यकर्ताओं के भी नायक हैं। लिहाजा संगठन भी उनके दिशा–निर्देश में ही चलेगा। मनमोहन सिंह को कमजोर ठहराने लगी भाजपा का शीर्ष नेतृत्व यह बताता रहा है कि प्रधानमंत्री की पकड़ सरकार पर ही नहीं अपने संगठन पर भी होना चाहिए। मोदी उसी रूप में दिखेंगे। यह तय माना जा रहा है कि पार्टी का अध्यक्ष कोई भी हो एजेंडा मोदी का चलेगा। दरअसल लोकसभा की जीत के बाद कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी मोदी के विश्वस्त अमित शाह ही कमान संभाल सकते हैं। सरकार का स्वरूप लगभग तय हो गया है। यूं तो भाजपा को अकेले दम पूर्ण बहुमत मिला है। लेकिन सरकार में राजग के सभी सहयोगी दलों को हिस्सा मिलेगा। पार्टी अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने भी इसका इजहार कर दिया है। उन्होंने कहा सरकार बनाने के लिए बहुमत चाहिए, लेकिन भाजपा देश बनाना चाहती है और इसलिए सभी को जोड़ा जाएगा।
भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार की लहर में ना वामदल का दम रहा, ना किसी मोर्चे के चर्चे, यह स्थिति सम्पूर्ण देश में मोदी जी के नेतृत्व में वर्ष 2014 के लोक सभा चुनाव प्रचार अभियान के दौरान जन–जन के द्वारा मोदी जी की चर्चा का मुद्दा बना रहा है, इस प्रकार क्या नरेन्द्र मोदी की शानदार जीत के शोर मे उन सांसदों की अहमियत भुलाई जा रही है, तो उनके खिलाफ लड़कर 200 और जीतकर संसद पहुंचे हैं? गौर से देखे तो इनकी संख्या भले ही बड़ी हो, लेकिन कांग्रेस के लिए महज सीटों के साथ प्रभावी विपक्ष की भूमिका निभाना मुश्किल होगा। लगभग 57 सीटों वाले गैर राजग और संप्रग दल भी इतने खानों में बंटे हैं कि यहां न तो वामदलों का दबाब होगा और न ही किसी मोर्चे के चर्चे। ऐसे में अंदाजा लगाया जा सकता है कि लोकसभा के भीतर नरेन्द्र मोदी सरकार के लिए विपक्ष की चुनौती कैसी होगी। तमिलनाडु के जयललिता की अन्नाद्रमुक जरूर सीटों की संख्या के लिहाज से राष्ट्रीय स्तर पर तीसरे नंबर की पार्टी उभरी है लेकिन उनकी फितरत को जरा भी समझने वाले जानते हैं कि वे मोदी सरकार से टकराव के बजाय, उनके साथ मिलकर ही चलेगी। इसी तरह चौथे नंबर पर रही ममता बनर्जी सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी कांग्रेस के साथ किसी कीमत पर खड़ी नहीं दिखना चाहेंगी। महज एक दशक पहले राष्ट्रीय फलक पर बड़ी ताकत और एक गंभीर विकल्प बनती दिख रही वामपंथी पार्टियां इस बार कही नहीं है। पिछले चुनाव में ये दल 60 से घटकर 24 पर पहुंचे थे तो इस बार महज एक दर्जन के करीब सीटों पर सिमट गए हैं। सबसे लंबी वामपंथी सरकार का विश्व रिकार्ड बनाने वाले पश्चिम बंगाल में भी इस बार ये मुंह छुपाने की हालत में है। वामपंथियों के दोनों प्रमुख साथी मुलायम सिंह यादव और नीतीश कुमार भी उन्हीं की तरह मुंह की खा रहे हैं। सीटों पर सिमट रहे हैं उधर बिहार में लालू प्रसाद की रजद को छोड़कर कांग्रेस है। उत्तरप्रदेश में रालोद की जहां सफाया हो गया है वहीं महाराष्ट्र में राकांपा भी अब ऐसी स्थिति में नहीं रह गई है कि संसद में अपनी कोई मजबूत आवाज रख सके। अपने मुट्ठी भर सांसदों के साथ आम आदमी पार्टी (आप) को भी संसद में कोई बात रखने के लिए अपने नाटकीय अंदाज का ही सहारा लेना होगा।
भारतीय जनता पार्टी की ओर से कहा गया जनता का जबाब विरोधियो को अवश्य मिलेगा। इस ऐतिहासिक चुनाव में अपने राजनीतिक विरोधियों में से अधिकांश की ओर से वांछित और यहाँ तक कि कई बार अपमानित किए जाने के साथ–साथ देश–विदेश के कथित बुद्धिजीवियों की एक टोली की ओर से एक खतरनाक शख्स के तौर पर देखे जाने वाले नरेन्द्र मोदी ने प्रचंड जीत हासिल कर सबको जबाब दे दिया है। वस्तुतः मोदी के पक्ष में उनके विरोधियों को यह करारा जबाब आम जनता की ओर से दिया गया है इसी के साथ उन्होंने युद्ध को सबसे लोकप्रिय, भरोसेमंद और अच्छे दिन की उम्मीद लगाने वाले नेता के रूप में भी स्थापित कर लिया है, नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा जिस तरह अकेले दम बहुमत के आंकड़े को पार कर गई और इस कामयाबी ने जिस प्रकार अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में हासिल की गई जीत को भी पीछे छोड़ दिया उससे मोदी नायक से महानायक की श्रेणी में प्रवेश करते दिख रहे हैं। अपनी राजनीतिक सफलता से देश दुनिया को चमत्कृत करने वाले मोदी भारत के पहले ऐसे नेता हैं जो मुख्यमंत्री रहते प्रधानमंत्री पद के दावेदार बने और फिर उसके हकदार भी बन गए। मोदी की करिश्माई जीत भारतीय लोकतंत्र की महिमा का भी बखान करती है। यह हमारे लोकतंत्र की खूबसूरती ही है कि गरीब परिवार में जन्मा एक ऐसी मां का बेटा दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का शासक बनने जा रहा है जो कभी दूसरों के घर बर्तन कपड़े धोती थी। मोदी यकायक राष्ट्रीय राजनीति के परिदृश्य पर उभरे और फिर आंधी की तरह आए और तूफान की तरह विरोधियों को उड़ा ले गए। यह बात और है कि उनके विरोधियों को दूर–दूर तक उनकी कही कोई लहर जो कुछ है वह मीडिया की बनाई हुई है।
निःसंदेह राजनीतिक दल कभी भी न तो अपने विरोधियों की बढ़त स्वीकार करते हैं और न ही उसे अपने लिए चुनौती बताते हैं लेकिन अंध मोदी विरोध में डूबे ज्यादातर भाजपा विरोधी दलों ने जिस तरह उन्हें खारिज करने के साथ–साथ उनका राक्षसीकरण किया उसकी मिलना मुश्किल है इन दलों ने एक

और खराब काम यह किया कि उन्होंने विकास के मुद्दों को किनारे कर सांप्रदायिकता का हौवा खड़ा करने की कोशिश की। ऐसा तो वही कर सकते हैं जो या तो अहंकार में डूबे हो अथवा किसी भी हाल में सच को स्वीकार न करने पर तुले हों। मोदी ने अपनी राजनीतिक विरोधियों को चुनाव में मात ही नहीं दी, बल्कि उनके घमंड को भी तोड़ा है। इसके साथ ही उनकी विकृत राजनीति का भी पर्दाफाश किया है। उन्होंने यह भी साबित किया कि वह सबको साथ लेकर चलने और सबका विकास करने और भारत को सबसे आगे रखने की जो बातें बार–बार कर रहे थे वे दिखावटी नहीं थी, बल्कि उनमें कुछ तत्व भी था। अब उनका प्रधानमंत्री बनना महज एक औपचारिकता है, लेकिन उनके समक्ष जो चुनौतियां हैं वे साफ दिख रही है। उन्हें एक तो अच्छे दिन आने की उम्मीदें जिंदा रखती है और दूसरे देश के विकास के लिए जरूरी हरसंभव कदम उठाने है। इसके अतिरिक्त उन्हें जो एक काम खास तौर पर करना है वह है अल्पसंख्यक समाज को यह भरोसा दिलाना कि उनके मन में जो आशंकाएँ हैं उनका कहीं कोई आधार नहीं और न हो सकता है। चूंकि प्रत्येक चुनावी जीत उम्मीद जगाने के साथ शुभ का संचार करती है इसलिए यह कामना की जानी चाहिए कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आने वाले दिन सभी के लिए वास्तव में अच्छे होंगे इस कामना के साथ आम जनता को धैर्य भी धारण करना होगा और नई सरकार को कुछ समय भी देना होगा।

मोदी की आंधी में उड़े सूबाई क्षत्रिय जैसे नारे इस आम चुनाव में सम्पूर्ण देश में एक मोदी जी के नाम पर हवा फैली थी। लोकसभा चुनाव में आई मोदी की आंधी में तमाम क्षेत्रीय दलों और उनके क्षत्रयों का सफाया हो गया है। उत्तरप्रदेश की सियासत की सच्चाई बन चुके सपा व बसपा जैसे ताकतवर दल न जाने कहां गायब हो गई। कुनबे की मानी जाने वाली समाजवादी पार्टी कुनबे में ही सिमट कर रह गई, वहीं बसपा का सूपड़ा साफ हो गया। बिहार में लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार, महाराष्ट्र में शरद पवार और तमिलनाडु में करूणानिधि जैसे क्षत्रयों को अपनी राजनीतिक साख बचाने के लाले पड़ गए। इनके साथ वाम मोर्चा का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। ज्ञातव्य है कि चुनावी आंधी में उत्तरप्रदेश में चौंकाने वाले नतीजे आए हैं। नौवीं लोकसभा में उत्तरप्रदेश में क्षेत्रीय दलों के खाते में जहां सीटे थी, वह घटकर मात्र पांच रह गई है। राजनीतिक पंडितों को भी बसपा का सूपड़ा होने का अंदेशा नहीं था। पार्टी एक अदद संसदीय सीट के लिए तरस गई। मुलायम सिंह जैसे दिग्गज समाजवादी नेता ने खुद दो सीटों से जीत हासिल की जिसमें एक को छोड़ना ही होगा। इसके अलावा मुलायम सिंह अपने दो भतीजे व पुत्रवधु डिंपल को अलावा किसी और को नहीं जिता पाए। पार्टी इन्हीं पांच सीटों पर सिमट कर रह गई है। आजमगढ़ सीट के बहाने पूर्वांचल पर कब्जा करने की मंशा का पूरा होना दूर मुलायम सिंह को खुद जीत हासिल करने में एड़ी चोटी का जोर लगाना पड़ा। पश्चिमी उत्तरप्रदेश में मजबूत पैठ वाले राष्ट्रीय लोकदल के रूप में चौधरी अजीत सिंह के राजनीतिक भविष्य पर सवालिया निशान लग गया है। सियासी रूख की नजाकत को देखकर जो दल मोदी लहर पर सवार हुए, वे पार हो गए। इनमें अपना दल (दो सीट) और बिहार में लोजपा (छह सीट) प्रमुख है बिहार के क्षत्रिय नीतीश कुमार हर सियासी जनता दल से बड़ी उम्मीदें लगाई जा रही थी लेकिन चुनाव में पार्टी सिमट सी गई। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) मुखिया शिबू सोरेन और झारखंड विकास मोर्चा (झाविमो) प्रमुख बाबूलाल मरांडी को भाजपा प्रत्याशी से कड़ी चुनौती मिली है। दक्षिण के राज्य तमिलनाडु में बारी–बारी से संभालने वाले द्रमुक प्रमुख करूणानिधि का राज्य में सफाया हो गया है। उनकी पार्टी का खाता भी नहीं खुल सका है, महाराष्ट्र की सियासत के दिग्गज रहे शरद पवार भी मोदी की लहर में धरातल पर पहुंच गए हैं। राज ठाकरे की पार्टी मनसे का बुरा हाल हुआ। मोदी को समर्थन का एलान कर शिवसेना के सामने उम्मीदवार खड़ा करने की पार्टी की रणनीति काम नहीं कर पाई। पिछले लोकसभा चुनाव में मनसे को 4.6 प्रतिशत वोट मिले थे, जो कि इस बार और नीचे गिर गए। उधर जम्मू कश्मीर में सत्ताधारी नेशनल कांफ्रेंस शून्य आ गई।

2014 के लोकसभा चुनाव के समय इंडिया इंक भी हुआ मोदी मय इस प्रकार का माहौल बहुत तेजी से बना देश का उद्योग जगत पिछले कई महीनों से जिस चीज की उम्मीद लगाए हुए था, वह अंततः सच साबित हुआ है। देश एक सशक्त व स्थायी सरकार बनाने का रास्ता साफ हो गया है, भाजपा को मिले स्पष्ट बहुमत का इंडिया इंक ने जोरदार स्वागत करते हुए उम्मीद जताई है कि नई सरकार अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए तत्काल कदम उठाने शुरू कर देगी। रीयल स्टेट बीमा कंपनियों से लेकर ऑटो उद्योग ने राजग को मिले स्पष्ट बहुमत पर खुशी का इजहार किया है। उद्योग चैंबर सीआईआई ने कहा है कि चुनाव परिणाम भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता को बताते हैं इससे अर्थव्यवस्था को लेकर कुछ ठोस फैसले करने का मौका मिला है। अगर ऐसा किया जाता है तो चालू वित्त वर्ष दौरान 6. 5 फीसद की विकास दर भी हासिल की जा सकती है, फिक्की ने कहा कि यह बहुमत देश के युवा वर्ग की उम्मीदें बताया है। नई सरकार को निवेश के मुताबिक माहौल बनाने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया जा सके, एसोचैम ने उम्मीद जताई है कि नरेन्द्र मोदी की सरकार गवर्नेस के मामले में गुजरात मॉडल का अनुसरण केन्द्र के स्तर पर भी करेगी। मंदी से त्रस्त उद्योग काफी समय से नई सरकार का इंतजार कर रहा था अब जबकि नरेन्द्र मोदी की अगुआई ने राजग की सरकार बनने जा रही है तो उद्योग जगत ने अपनी मंशा भी जतानी शुरू कर दी है। जनरल मोटर्स इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट पी. बालेद्रन का सुझाव है कि नई सरकार को जल्द से जल्द प्रत्यक्ष कर कोड (डीटीसी) और जीएसटी लागू करने के लिए कदम उठाने चाहिए। साथ ही नयी सरकार को श्रम सुधार की दिशा में भी आगे बढ़ना चाहिए। रीयल्टी कंपनियों ने भी स्थायी सरकार बनने की आस में रीयल स्टेट क्षेत्र में तेजी आने की उम्मीद जताई है।

इस प्रकार वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की उम्मीदवारी घोषित होते ही देश में एक विशेष प्रकार की मोदी जी के पक्ष में चुनावी लहर बनी थी। मोदी जी के सम्बन्ध में देश की बड़ी–बड़ी हस्तियों ने अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की –

कुमार मंगलम विडला चेयरमैन आदित्य विडला समूह के अनुसार – लोगों ने स्थिरता विकास और अच्छे प्रशासन के लिए वोट किया है, सबसे अहम है कि नई सरकार आर्थिक विकास को तेज करेगी और मंहगाई पर अंकुश लगायेगी।

किरण मजूमदार शॉ सीएमडी वायोकान के अनुसार – मोदी जी ने सभी सर्वेक्षणों को पीछे छोड़ है, हम अब बदलाव के स्वर्णिम युग मे प्रवेश कर रहे हैं।

चन्दा कोचर, सीईओ व एम डी आई सीसी आईसीआई बैंक के अनुसार, मतदाताओं ने गवर्नेश और विकास के लिए स्पष्ट जनादेश दिया है, यह अर्थ व्यवस्था में भरोसा लौटाने के लिए निर्णायक कदम उठाने का जनादेश है।

अजय श्रीराम प्रेसीडेन्ट सी आई आई के अनुसार, भारत के लिए मल्टी ब्राण्ड रिटेल में एफ डी आई की जरूरत है हम इस बारे में अपना रूख नई सरकार को स्पष्ट करेंगे।

श्रीचन्द्र हिन्दुजा चेयरमेन हिन्दुजा समूह के अनुसार, मोदी गुजरात में सुशासन साबित कर चुके हैं, जनता ने उनके नेतृत्व में भरोसा दिलाया है।

विजय माल्या चेयरमैन यू वी ग्रुप के अनुसार, मोदी के नेतृत्व में अब मजबूत और स्थिर सरकार बनेगी जिस पर गठबंधन का भी दबाव नहीं बनेगा।

रफीक अहमद अध्यक्ष फियो के अनुसार, नई सरकार को मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र को वापस पटरी पर लाना होगा ताकि देश के निर्यात और आर्थिक विकास की रफ्तार को बढ़ाया जा सके।

आनन्द महिन्द्रा सी एम डी, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा के अनुसार, शानदार उदय के लिए श्री मोदी को बधाई। वृद्धि को वे करार भारत ने आपको शिखर पर पहुंचाया है, उम्मीद है आप उम्मीदें पूरी करेंगे। [5]

निष्कर्षतः वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की लोकप्रियता गुजरात के मुख्य मंत्रित्वकाल से ही बढ़ती रही किंतु प्रधानमंत्री के पद के लिए उम्मीदवार घोषित होने के बाद सम्पूर्ण देश में मोदी की लहर बनी और परिवर्तन की लहर ने जनादेश देकर प्रचण्ड बहुमत ने जीत का सेहरा मोदी जी के माथे पर बांध दिया और सम्पूर्ण देश एवं विदेश में वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की ख्याति दिनो दिन बढ़ी है।

परिणाममूलक परिदृश्य

वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमत्री पद के उम्मीदवार भारतीय जनता पार्टी के द्वारा घोषित किए गये, यह लोकसभा का चुनाव पूर्णतः भारतीय जनता पार्टी की तरफ से नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में लड़ा गया। इस चुनाव का परिणाममूलक परिदृश्य भी मोदी जी के पक्ष में था 16 मई सन् 2014 को जब ईवीएम मशीनों ने परिणाम उगलने शुरू किए तो सारा हिन्दुस्तान झूम उठा। भारतीय जनता पार्टी और नरेन्द्र मोदी को लोकसभा की इतने सीटें मिली थी जिनका अंदाजा स्वयं भारतीय जनता पार्टी को भी नहीं था। गुजरात, राजस्थान, हिमांचल प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली सहित कुल 10 राज्य ऐसे थे जहां मुख्य राजनीतिक दल कांग्रेस का खाता तक नहीं खुल सका था। आजादी के बाद पहली बार था कि किसी गैर कांग्रेसी राजनीतिक दल को स्वयं अपने बूते केन्द्र में सरकार बनाने का बहुमत मिला था। यह भी पहली बार था कि किसी भी विरोधी दल को इतनी सीटें भी नही मिली थी कि उसके नेता को नेता प्रतिपक्ष का दर्जा मिल पाता।

जनता ने नरेन्द्र मोदी को जीभर कर वोट दिए थे। 16 मई को जब परिणाम आने शुरू हुए तो सभी अवाक रह गए। अगले दिन के समाचार पत्र सिर्फ नरेन्द्र मोदी की जीत की खबरों से ही भरे हुए थे। यहां कुछ प्रमुख हिन्दी समाचार पत्रों की सम्बन्धित खबरों को प्रकाशित किया जा रहा है, जिनसे पता चलता है कि नरेन्द्र मोदी को जनता का कितना प्रचण्ड समर्थन मिला था।

सप्रंग तीन की सरकार का दम भर कर चुनावों में उत्तरी कांग्रेस न सत्ता बचा पाई न साख। देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी अपनी ऐतिहासिक हार से दो चार है। 2009 में 206 सीटें हासिल करने वाली पार्टी महज 53 सीटों तक सिमट कर रह गई।

सप्रंग अध्यक्ष सोनिया गांधी और उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने जनता के आदेश के आगे हार तो स्वीकार कर ली, लेकिन राहुल के चेहरे की फीकी मुस्कान हालात की चुगली करने को काफी थी। हार के पतझड़ में कभी पार्टी का गढ़ रहे यूपी में राहुल और सोनिया ही अपनी सीट बचाने में कामयाब रहे जबकि देश भर में पार्टी के बड़े–बड़े दिग्गज धराशायी हो गये। इनमें टीम राहुल के सदस्य भी शामिल रहे। महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में सरकार के होते हुए भी कांग्रेस को दुर्गति का सामना करना पड़ा। हार से निराश असम के मुख्यमंत्री तरूण गोगाई और महाराष्ट्र के मंत्री नारायण राणे से जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए इस्तीफे का एलान भी कर दिया। चुनाव परिणामों से कांग्रेस पार्टी सदमें में है। सत्ता विरोधी लहर और पार्टी की निष्क्रियता से उपजी नाराजगी को जापानी कंपनियों का प्रचार अभियान और प्रियंका की मनुहार भी रोक पाने में नाकाम रही। हाल में ही हुए विधानसभा चुनावों में हार के बाद पार्टी को पत्रकारों की कल्पना से भी ज्यादा चुनावों में चारों खाने चित्त हो गई है। हारने वालों की बात करें तो राहुल के करीबियों अजय माकन, सीपीजोशी, जितिन प्रसाद, मधुसूदन मिस्त्री, सचिन पायलट, ज्योति मिर्धा, मीनाक्षी नटराजन, भंवर जितेन्द्र सिंह, हरीश चौधरी, आरपीएन सिंह, प्रताप सिंह बाजवा जैसे दिग्गज चुनाव में हार गए।

लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत के बाद जहां एक ओर अशोक रोड स्थित भाजपा मुख्यालय पटाखों की आवाज से गूंजता रहा, वहीं अकबर रोड स्थित कांग्रेस मुख्यालय में मातमी सन्नाटा पसरा रहा। मतगणना के दौरान जैसे–जैसे भाजपा का ग्राफ बढ़ता रहा, वैसे–वैसे कार्यकर्ताओं का हुजूम भी मिठाई खिलाकर एक दूसरे को जीत की बधाई देते रहे। वहीं पिछले दो आम चुनावों के बाद ढ़ोल–नगाड़ों से गूंजने वाले कांग्रेस मुख्यालय से कार्यकर्ता तो दूभर उसके नेताओं ने भी दूरी बनाए रखी।

भाजपा मुख्यालय से जीत की खुशबू तो एक दिन पहले से तभी आने लगी थी, जब लड्डू बनने शुरू हो गए थे। शुक्रवार को शुरूआती रूझानों से जीत का अंदाजा लगा चुके दिल्ली व एनसीआर के भाजपा कार्यकर्ताओं ने भाजपा मुख्यालय का रूख कर लिया। दोपहर आते–आते जीत सुनिश्चित देख वरिष्ठ नेता भी पार्टी मुख्यालय पहुंचने लगे। बधाई देने और मिठाई बांटने का दौर दिन भर चलता रहा। जीत का यह जश्न मुख्यालय की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहा। बाहर सड़क पर भी आतिशबाजी खूब हुई। बाहर नजारा दिन में ही दीवाली मनाने जैसा था। कुछ कार्यकर्ता ढ़ोल–नगाड़े और बैंड बाजे के साथ आए, तो कुछ ऐसे हाथी लेकर आए जिन पर कमल का निशान बना था। जीत के जश्न में डूबे कार्यकर्ताओं की जुबान पर सिर्फ मोदी का नाम था। सिर पर भगवा रंग की टोपी और मोदी की तस्वीर वाली सफेद टीशर्ट पहले ये कार्यकर्ता मोदी मोदी और आ गई मोदी सरकार के नारे लगा रहे थे। कुछ की टीशर्ट पर मोडीफाइड इंडिया भी लिखा था, तो कई अपने हाथ में मोदी की फोटो वाली तख्तियां लिए थे। कुछ कार्यकर्ताओं की भगवा टोपी पर भारत मोदी आर्मी भी लिखा था। कार्यकर्ताओं के साथ–साथ भाजपा के वरिष्ठ नेता वेंकैया नायडू, रविशंकर प्रसाद, रामलाल, मुख्तार अब्बास नकवी, प्रकाश जावडेकर भी एक दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दे रहे थे।

सरकार ही नहीं, संगठन के भी सुप्रीमो होगे मोदी

नरेन्द्र मोदी के नाम पर दर्ज हुई ऐतिहासिक जीत के बाद यह तय हो गया है कि सरकार ही नहीं संगठन भी उनकी ही राह पर चलेगा। एक तरह से वह संगठन के भी सुप्रीमो होंगे और भाजपा महासचिव अमित शाह उनके सिपहसालार। अकेले दम बहुमत के पार पहुंची भाजपा सरकार में सहयोगी दल भी उचित स्थान पाएंगे।

भाजपा के लिए सबसे बड़ी समस्या अंदरूनी खींचतान और कलह रही है। बात नेतृत्व की रही हो या रणनीति की विवाद हमेशा से पार्टी को झुलसाता रहा है। मोदी की जीत के बाद यह लगभग तय हो गया है कि अगले कुछ वर्षों तक पार्टी और सरकार एक ही राह पर चलेगी। नेतृत्व की समस्या फिलहाल खत्म हो गई है। जाहिर है कि ऐसी स्थिति में लालकृष्ण आडवानी, मुरली मनोहर जोशी समेत कई अन्य क्षुब्ध व नाराज नेताओं को भी चाहे–अनचाहे पार्टी लाइन पर ही चलने को मजबूर होना पड़ेगा। दरअसल अभूतपूर्व जीत के साथ ही मोदी ने यह साबित कर दिया है कि वह जनता के ही नहीं कार्यकर्ताओं के भी नायक हैं। लिहाजा संगठन भी उनके दिशा निर्देश में ही चलेगा। मनमोहन सिंह को कमजोर ठहराने वाली भाजपा का शीर्ष नेतृत्व यह

बताता रहा है कि प्रधानमंत्री की पकड़ सरकार पर ही नहीं अपने संगठन पर भी होना चाहिए। मोदी उसी रूप में दिखेंगे। यह तय माना जा रहा है कि पार्टी का अध्यक्ष कोई भी हो, एजेंडा मोदी का चलेगा। दरअसल लोकसभा की जीत के बाद कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी मोदी के विश्वस्त अमित शाह ही कमान संभाल सकते हैं।

सरकार का स्वरूप लगभग तय हो गया है। यूं तो भाजपा को अकेले दम पूर्ण बहुमत मिला है, लेकिन सरकार में राजग के सभी सहयोगी दलों को हिस्सा मिलेगा। पार्टी अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने भी इसका इजहार कर दिया है। उन्होंने कहा, सरकार बनाने के लिए बहुमत चाहिए लेकिन भाजपा देश बनाना चाहती है और इसलिए सभी को जोड़ा जाएगा।

जनता का जबाब

अपने राजनीतिक विरोधियों में से अधिकांश की ओर से लांछित और यहां तक कि कई बार अपमानित किए जाने के साथ–साथ देश–विदेश के कथित बुद्धिजीवियों की एक टोली की ओर से एक खतरनाक शख्स के तौर पर देखे जाने वाले नरेन्द्र मोदी ने प्रचंड जीत हासिल कर सबको जबाब दे दिया है। वस्तुतः मोदी के पक्ष में उनके विरोधियों को यह करारा जबाब आम जनता की ओर से दिया गया है। इसी के साथ उन्होंने खुद को सबसे लोकप्रिय, भरोसेमंद और अच्छे दिन की उम्मीद जगाने वाले नेता के रूप में भी स्थापित कर लिया है। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा जिस तरह अकेले दम बहुमत के आंकड़े को पार कर गई और इस कामयाबी ने जिस प्रकार अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में हासिल की गई जीत को भी पीछे छोड़ दिया उससे मोदी नायक से महानायक की श्रेणी में प्रवेश करते दिख रहे हैं। अपनी राजनीतिक सफलता से देश दुनिया को चमत्कृत करने वाले मोदी भारत के पहले ऐसे नेता हैं जो मुख्यमंत्री रहते प्रधानमंत्री पद के दावेदार बने और फिर उसके हकदार भी बन गए। मोदी की करिश्माई जीत भारतीय लोकतंत्र की महिमा का भी बखान करती है। यह हमारे लोकतंत्र की खूबसूरती ही है कि गरीब परिवार में जन्मा एक ऐसी मां का बेटा दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का शासक बनने जा रहा है जो कभी दूसरों के घर बर्तन–कपड़े धोती थी, मोदी यकायक राष्ट्रीय राजनीति के परिदृश्य पर उभरे और फिर आंधी की तरह आए और तूफान की तरह विरोधियों को उड़ा ले गए। यह बात और है कि उनके विरोधियों को दूर–दूर तक उनकी कहीं कोई लहर ही नहीं दिख रही थी। उनकी मानें तो यह लहर अव्वल तो एक छलावा है और जो कुछ है भी वह मीडिया की बनाई हुई है।

निःसंदेह राजनीतिक दल कभी भी न तो अपने विरोधियों की बढ़त स्वीकार करते हैं और न ही उसे अपने लिए चुनौती बताते हैं, लेकिन अंध मोदी विरोध में डूबे ज्यादातर भाजपा विरोधी दलों ने जिस तरह उन्हें खारिज करने के साथ–साथ उनका राक्षसीकरण किया उसकी मिशाल मिलना मुश्किल है। इन दलों ने एक और खराब काम किया कि उन्होंने विकास के मुद्दों को किनारे पर सांप्रदायिकता का हौवा खड़ा करने की कोशिश की। ऐसा तो वही कर सकते हैं जो या तो अंहकार में डूबे हो अथवा किसी भी हाल में सच को स्वीकार न करने पर तुले हों। मोदी ने अपने राजनीतिक विरोधियों को चुनाव में मात ही नहीं दी, बल्कि उनके घमंड को भी तोड़ा है। इसके साथ ही उनकी विकृत राजनीति का भी पर्दाफाश किया है। उन्होंने यह भी साबित किया कि वह सबको साथ लेकर चलने और सबका विकास करने और भारत को सबसे आगे रखने की जो बातें बार–बार कर रहे थे वे दिखावटी नहीं थी, बल्कि उनमें कुछ तत्व भी था। अब उनका प्रधानमंत्री बनना महज एक औपचारिकता है, लेकिन उनके समक्ष जो चुनौतियां है वे साफ दिख रही है। उन्हें एक तो अच्छे दिन आने की उम्मीदें जिंदा रखनी है और दूसरे, देश के विकास के लिए जरूरी हरसंभव कदम उठाने हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें जो एक काम खास तौर पर करना है वह है अल्पसंख्यक समाज को यह भरोसा दिलाना कि उनके मन मे जो आशंकाएँ हैं उनका कहीं कोई आधार नहीं और न हो सकता है। चूंकि प्रत्येक चुनावी जीत उम्मीद जगाने के साथ शुभ का संचार करती है इसलिए यह कामना की जानी चाहिए कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आने वाले दिन सभी के लिए वास्तव में अच्छे होंगे। इस कामना के साथ आम जनता को धैर्य भी धारण करना होगा और नई सरकार को कुछ समय भी देना होगा।

निष्कर्ष

वर्ष 2014 में भारतीय लोकतांत्रिक राजनैतिक व्यवस्था में भारत के 15 (पंद्रहवें) प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पद एवं गोपनीयता की शपथ लेने के बाद उन्होंने देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में कामयाबी हासिल किए हैं। श्री मोदी जी देश में व्याप्त भ्रष्टाचार से सम्बन्धित विशेष जांच दल की स्थापना की है, समस्त भारतीयों को अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आमजन को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में समावेशन हेतु प्रधानमंत्री जनधन योजना को आरम्भ किए। रक्षा उत्पादन को क्षेत्र में विदेश निवेश की अनुमति तथा योजना आयोग के समाप्ति की घोषणा की। श्री मोदी सरकार 45 प्रतिशत का कर देकर कालाधन घोषित करने की छूट दी है। सातवें वेतन आयोग की सिफारिशों को स्वीकृति प्रदान करने हेतु रेल बजट प्रस्तुत करने की प्रथा की समाप्ति की घोषणा की। कालाधन तथा समानान्तरण अर्थव्यवस्था को समाप्त करने के लिए 08 नवम्बर 2016 से 500 तथा 1000 के प्रचलित नोटों को अमान्य कर दी गई।

निष्कर्षतः लोकसभा चुनाव 2014 के परिणाम मूलक परिदृश्य से स्पष्ट है कि मोदी जी के नेतृत्व व सम्पूर्ण देश में मोदी लहर से चुनाव मे जहाँ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन 336 सीटें जीत कर देश में सबसे बड़ी बहुमत प्राप्त पार्टी (भाजपा) संसदीय दल के रूप मे उभरी उसमें अकेले भारतीय जनता पार्टी 282 सीटों पर विजय हासिल करते हुये केन्द्र में पूर्ण बहुमत सिद्ध करने में सफल हुई। लम्बे समय तक देश में शासन करती हुई कांग्रेस केवल 44 सीटों पर ही सिमट कर रह गयी एवं कांग्रेस के गठबंधन को मात्र 55 सीटें ही मिली। अतः लोकसभा चुनाव 2014 का सम्पूर्ण परिणाममूलक परिदृश्य मोदी जी की देश व्यापी लहर के कारण भारतीय जनता पार्टी को पूर्णतः बहुमत सिद्ध करने में सिमट कर रह गया तथा मोदी जी को आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

संदर्भ

1. नरेन्द्र मोदी विकीपीडिया– 2014 लोकसभा चुनाव इंटरनेट पृष्ठ 7–21, https/hi.wikipedia 01.01.2012
2. सिंह मीनाक्षी (2014), प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी – एक संघर्ष गाथा, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, पृष्ठ 84.
3. सिंह मीनाक्षी (2014), प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी – एक संघर्ष गाथा, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, पृष्ठ 85.
4. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी– विकिपीडिया, संसदीय दल के नेता का निर्वाचन, पृष्ठ 8–21 इंटरनेट 01.01.2012.
5. सिंह मीनाक्षी (2014), प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी – एक संघर्ष गाथा, प्रथम संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली पृष्ठ 140–142.